RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 42 अंक 15 हल्द्वानी सम्वत् 2083 सोमवार 14 सितम्बर 2026 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

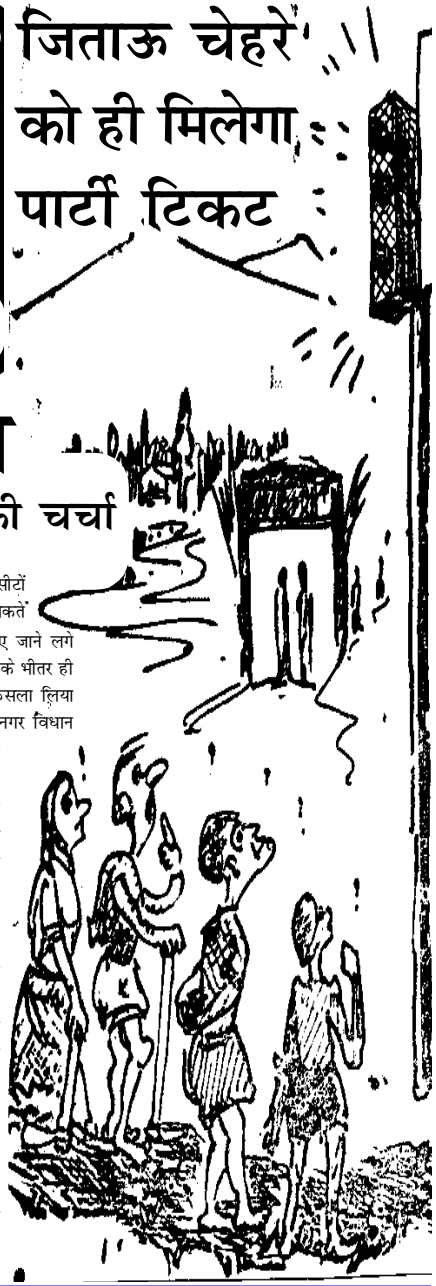

टिकट के लिये मचलते नेता

डीडीहाट सीट पर बहुत आड़े आ रहे हैं नेतागण। सबसे तजुर्बेदार विशन दा के दमखम बरकरार

खटीमा सीट पर राजू भण्डारी ने धार देनी शुरू कर दी है। विपक्ष भी कमजोर नहीं है

कपकोट सीट के लिये खुला ऐलान करते नेता बात पूरी न होने पर नाराजी दिखा सकते हैं।

कालाढूंगी सीट पर बंशीधर सयाने हैं किन्तु चुनौती काफी हैं इस बार

रामनगर सीट पर प्रकाश जोशी की चर्चा

कार्यालय प्रतिनिधि

उत्तराखण्ड में विधानसभा चुनाव कब होंगे, इसको लेकर बेचैनी होने लगी है। चुनाव हरिद्वार में कुम्भ से पहले होंगे या बाद में, इसी बात को लेकर खुसर-फुसर हो रही है लेकिन अन्दरखाने चल रही तैयारियों से लगता है शीघ्र चुनाव होने हैं। ऐसे में पार्टी टिकट के लिये मचलते नेताओं की सक्रियता दिखाई दे रही है। पार्टियों की बात करें तो भाजपा और कांग्रेस ही बड़ी पार्टियों के रूप में आमने सामने होंगी, इसके अलावा यूकेडी और निर्दलीय ताल ठोक रहे हैं। आम जन का बहुत मन यूकेडी के लिये भी है लेकिन इस दल को लगता है श्राप मिला हुआ है। कुछ सीटों पर इसके लिये माहौल बन चुका है लेकिन अपनी एकजुटता को बन्दरबांट करते हुए दल को कमजोर करने वालों से वोटरों का मोह भंग होता रहा है। इस पर्वतीय प्रदेश और पहाड़ की बात करने वाले दल की याद तब आती है जब बड़े दलों में अपेक्षित लाभ नहीं मिलता या सुनवाई नहीं होगी है। इसके अलावा राजनीति के जादूगर वोट गणित देखते हुए चुनाव मैदान की तैयार कर डालते हैं। ऐसा ही कुछ होने लगा है। टिकट की चाह में लम्बे समय से जूझ रहे कुछ नेताओं को लगने लगा है कि उनको पार्टी टिकट नहीं देगी इसलिये वह सम्भावित हालतों पर विचार करने लगे हैं।

प्रदेश की सभी विधानसभा सीटों पर कौन-कौन उम्मीदवार हो सकते हैं, इसको लेकर अनुमान लगाए जाने लगे हैं लेकिन कुछ सीटों पर पार्टियों के भीतर ही टकराव से अन्तिम समय में फैसला लिया जायेगा। ऐसी ही एक सीट रामनगर विधान सभा की है। इस सीट पर पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत और सल्ट के पूर्व विधायक रणजीत सिंह रावत की अपनी-अपनी चाहत है। ऐसे में कांग्रेस के प्रकाश जोशी का नाम चर्चा में है। माना जा रहा है कि जिस प्रकर के पार्टी के नेता रामनगर सीट को लेकर गहमागहमी कर चुके हैं ऐसे में हाईकमान तालमेल करेगा। चूंकि संजय नेगी अपना दबदबा दिखाते हुए कांग्रेस से टिकट की चाह रखते हैं और उनको हरदा का संरक्षण है लेकिन रणजीत रावत इस सीट पर टिकट का दावा कर रहे हैं। ऐसे में राहुल गांधी के करीबी और कालाढूंगी सीट पर चुनाव लड़ चुके प्रकाश जोशी के नाम

शेष पृष्ठ 2 पर

लोक कथाएं—— यू.आर.टम्टा

ठेकेदार नाम तो पाया

उसका नाम तो जगरनाथ था, परन्तु वह सुबह दस बजे से पहले कभी बिस्तरसे न उठता। और भी, जगत का नाथ होना तो दूर वह स्वयं अनाथ था। उसके माता-पिता उसके होश संभालने से पहले ही भगवान को प्यारे हो गये थे। हाँ, उसको अपने चाचा का भरूपर प्यार मिला था। यूँ तो चाचा-भतीजा में उम्र में दस-पन्द्रह साल का ही अन्तर रहा होगा परन्तु चाचा को अपनी जिम्मेदारी का एहसास पूरी तरह से था। उसने जगरनाथ की परवरिश में कोई कमी नहीं रखी। चाचा परमानन्द उसे अपने बच्चों से भी अधिक मानता था। सावित्री चाची भी जगरनाथ का पूरा ख्याल रखती। जब तक वह जवान नहीं हो गया, चाचा-चाची के साथ ही रहा। हालांकि वह घर व खेत के काम में कभी हाथ नहीं बँटाता था, फिर भी चाचा-चाची ने कभी भी उसने कुछ नहीं कहा। वे दोनों हर काम स्वयं ही कर लेते। जगरनाथ गाय-बैल को चराने के लिये जंगल भी नहीं ले जाता था, हालांकि उसकी उम्र के सभी लड़के ग्वाला (गाय बैल चुगाने ले जाना) जाने लगे थे।

जब जगरनाथ जवान हो गया तो सावित्री ने परमानन्द से कहा कि अब वह जवान हो गया है, उसकी शादी कर देनी चाहिये। परमानन्द के मन में भी यही बात थी। उसने जगरनाथ के लिये उपयुक्त लड़की की तलाश कर दी। पास के गाँव में ही एक सुन्दर गौरवर्ण की लड़की मिल गई। अत: बड़ी धूमधाम के साथ जगरनाथ की शादी सम्पन्न हो गई। बहू घर में आने की खुशी में सावित्री चाची फूले नहीं समाती थी। उसका अपना लड़का अभी छोटा ही था, इसलिये उसका विवाह करने का कोई प्रश्न नहीं था, इसलिये बहू भिन्डी को ही सावित्री चाची ने अपना बहू मान लिया। भिन्डी भी अपने चचिया ससुर व सास का पूरा आदर करती, नित्य प्रात: उनके पाँव छूने के बाद ही उसकी दिनचर्या प्रारम्भ होती। सास को वह किसी काम में हाथ नहीं लगाने देती। सास ने कभी कोई काम स्वयं करने का विचार किया तो उसे पता चलता कि उसे सावित्री पहले ही कर चुकी है। इस प्रकार उनके दिन बड़े अच्छे ढंग से कट रहे थे। अब जगरनाथ भी अपने आलस से कुछ उबर चुका था। भिन्डी उसे भी काम करने के लिये प्रेरित करती और इसका अनुकूल असर हुआ। अब जगरनाथ भी अपने चाचा के हर काम में मदद करने लगा।

एक दिन भिन्डी पनघट पर गई तो वहाँ उसकी भेंट अपनी पड़ोसन लछमा से हो गई। लछमा ने कहा- 'बहू, रात-दिन काम में लगी रहती हो, शायद इसी लिये दुबली हो गई हो। सावित्री बहन ने अब काम करना लगभग बन्द सा कर दिया है और मोटी पड़ती जा रही है। सुना है परमानन्द ने कोई खेत खरीदा है, हो सकता है तुम्हारे लिये ही खरीदा हो।' भिन्डी ने कहा- 'सास के तो बहू के आते ही आराम के दिन शुरू हो जाते हैं, इसलिये इसमें बुराई क्या है? उनकी सेवा का मौका मुझे मिल रहा है यही क्या कम है?' लछमा ने कहा- 'वह तो तुम ठीक ही कर रही हो, सास ससुर की सेवा होनी ही चाहिये। हमने भी तो अपने जमाने में अपने सास-ससुर की सेवा की है। पर एक अन्तर तो है ही बहू। कल उनकी अपनी बहू आयेगी तो उसका दर्जा हर हालत में तुमसे ऊपर होगा।' भिन्डी ने लछमा की बातों पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया और वह पानी

शेष पृष्ठ 5 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

पुलिस और प्रशासन की मजबूरी

मतलब सब चौपट

उत्तराखण्ड में नेताओं के बोल जिस प्रकार से सुनाई दे रहे हैं उससे साफ दिख रहा है कि हमारी पुलिस व्यवस्था और प्रशासन को लाचार बनाया जा रहा है। छुटभैये नेता भी सड़क चलते सवाल उठाने के अलावा कार्यालयों, थाना चौकियों में जाकर हंगामा करने को अपनी उपलब्धि समझने लगे हैं। इस प्रकार की हरकतों को सोशल मीडिया पर प्रचारित करते हुए अपनी ताकत को बताया जा रहा है। किन्हीं मामलों में लुंज-पुंज व्यवस्था और लापरवाह या सत्तालोभी अधिकारी भी दिखाई देते हैं। यह दोनों ही स्थितियां लोकतन्त्र को चौपट करने वाली हैं।

पुलिस और प्रशासन का अपना कार्य है, जिसमें किसी प्रकार हस्तक्षेप सत्ता या विपक्ष ने नहीं करना चाहिये। इनके ऊपर न्याय व्यवस्था भी है। लेकिन जिस प्रकार का व्यवहार समाज में दिखाई दे रहा है वह दबाव में लेकर कार्य करवाने जैसा लगता है। कानून-व्यवस्था से लेकर नियमों का पालन करते हुए सारे कार्य होने जरूरी हैं। प्रशासन को न्यायपूर्ण व्यवस्था को बरतना चाहिये। कहीं पर कुछ तो चूक हो ही रही होगी अन्यथा ये नेता चाहे किसी पार्टी के हों, इतना साहस छटभैये क्यों करने लगे हैं।

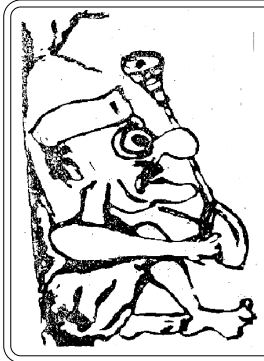

फसक

दाज्यू, लपलपाट होने ही वाली ठैरी

चुनाव तक लाग-लपेट होती रहेगी बल

दाज्यू, उच्चशिक्षा में कई समय से रुका लेवल बढ़ाओ कार्य ने इस बार गति पकड़ ली। एसोसिएट प्रोफेसर बनने लिये तड़फ रहे जग्गू दा ने गुड़ की भेली फोड़ दी है। कह रहे थे- 'मालमत्ता खूब मिल रहा है। गोपी और बरुवा को भी प्रोफेसर कहा जाएगा।' दाज्यू, कपाल में लिखा कौन टाल सकता है? जमाने के बड़े-बड़े फुद्दू नरम-गरम दिखाई देते हैं लेकिन रुपये टके को लेकर लपलपाट होने ही वाली ठैरी। हमारे ललुवा बैल को भी पेट भर भूसा चाहिये। इसकी बला से किसी का खेत उजड़े, कहीं बाढ़ आए। पूसा सिंह रिटायरमेंट के बाद ठेकेदारी करने लगा है। कह रहा था- 'निर्माण कार्य के बहुत अनुभव हैं। लेन-देन का सब निपट जाएगा और चुनाव के मौके पर दस-बारह खोखे हाथ लगेंगे।' रिमझिम मैडम भी मटर-पनीर की दावत दे चुकी है। दाज्यू, गजब ही ठैरा कहा। दुनियाभर की छुट्टी के साथ अपनी अंगड़ी अपनी धिंगड़ी सम्भालते रहो। गली-मोहल्ले में रौब हो जाने वाला ठैरा कि बड़े साहब हैं। बांकी भुतिया लेकर कौन किधर से खचोर रहा है मन की मन में होती है। दाज्यू, आप जानने ही वाले हुए कि रेता-पत्थर-लीसा चोर माननीय बनने के लिये फड़फड़ाते हैं और बनने के बाद लड़बड़ाते रहते हैं।

दाज्यू, चुनाव तक लाग-लपेट होती रहेगी बल। हल्द्वानी में कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे की सभा के बाद से शुद्धीकरण का मामला जारी है। पता नहीं कितने फितरती घूम रहे हैं शहर और कस्बे में। राहुल बाबा के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज करवाने से गुस्साए कांग्रेसियों ने प्रदर्शन कर डाले हैं। भाजपा भी हवा भरने में देरी नहीं कर रही है। युवाओं से सम्वाद के लिये कोई पीछे नहीं है। इस सम्वाद के लिये जैसे-जैसे पक्ष-विपक्ष के बड़े नेता मंच सजाने लगे हैं, वैसे-वैसे घुप्पू और भप्पू जैसे युवा नेता भी नये अवतार में दिखाई दे रहे हैं। कह रहे हैं- 'गोटी खेलने का सम्मान मिलेगा।' दाज्यू, तरबरान माल लपकने के लिये टब्बर नाथ ने भी ठेकेदारी शुरू कर दी है। बरसात ने बहुत नुकसान कर रखा है लेकिन आपदा को प्रसाद बना लेने वाले भी तो हैं।

दुनियाभर की खिचरोली चल रही है। नई दिल्ली से 22 वर्षीय युवती को घुमाने के बहाने देहरादून लाकर उसके साथ दुष्कर्म मामले में में युवक की गिरफ्तारी हुई। गिरहकटों की पकड़ और वाहन चैकिंग का काम तो चल ही रहा है। शूगर फ्री चाय का चलन बहुत बड़ चुका है। दुनियाभर की बीमारी का डेरा भी इसी कलजुग में पनपेगा बल। भगवान सबकी भली करें। -तुम्हारा भुली झकरुवा

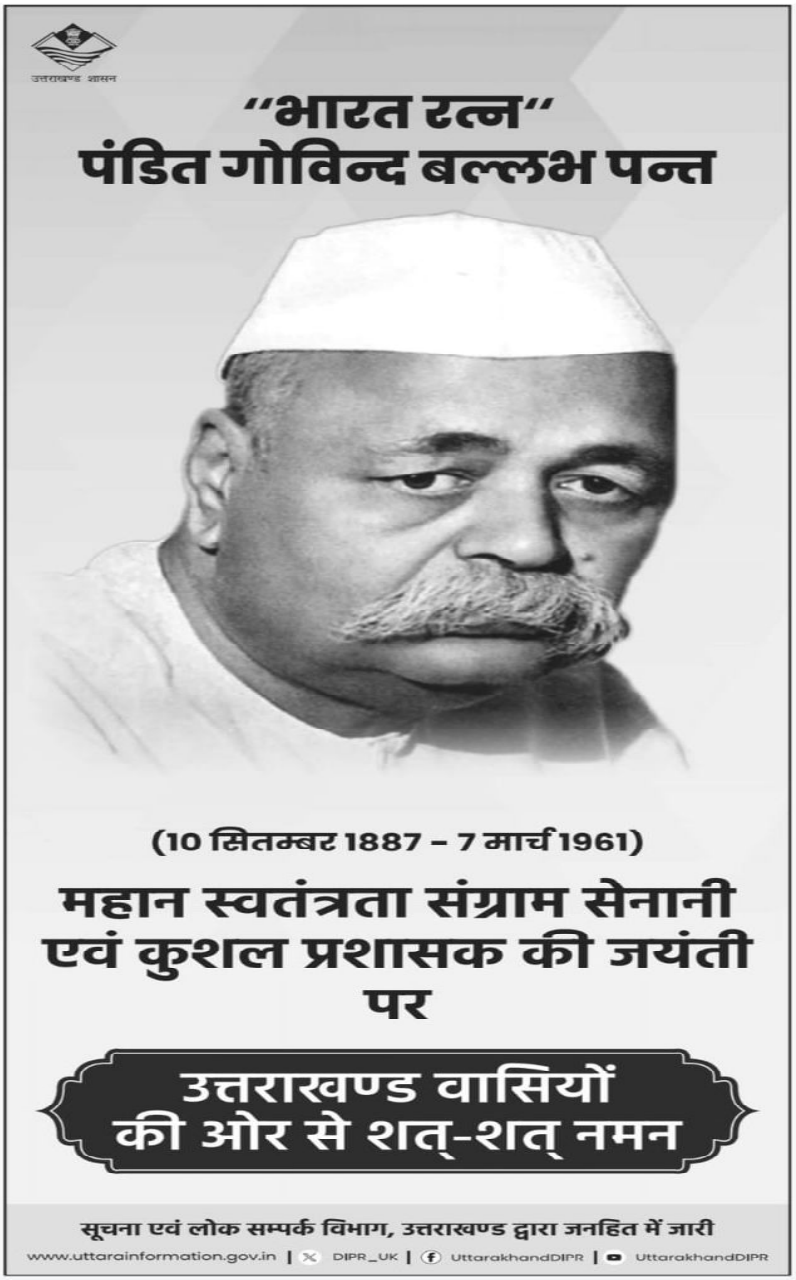

टिकट के लिये.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

की चर्चाएं तेज हैं। कहा जा रहा है कि श्री जोशी को आगे करने से हरदा और रणजीत टीम कुछ नहीं बोलेगी। साथ ही यह भी माना जा रहा है कि इसके बदले दूसरी सीटों पर अपनी बात मनवाएंगे। ऐसे में कालाढूंगी और लालकुआ सीट पर हरदा की चल सकती है। ऐसे में कालाढूंगी सीट पर पूर्व सांसद एडवोकेट महेन्द्र पाल व लालकुला से हरेन्द्र बोरा को मौका मिल सकता है। वैसे इस सीट पर नीरज तिवारी पूरी ताकत के साथ जुटे हैं और यह बात पार्टी भी जानती है। सम्भावना यह भी है कि यदि भाजपा इस बार बंशीधर भगत को टिकट नहीं देगी तो प्रकाश जोशी कालाढूंगी सीट पर ताकत दिखाएंगे। इस प्रकार के उलझे हुए गणित में टिकट की चाह रखने वाले नेताओं का बेचैन होना स्वभाविक है।

भाजपा-कांग्रेस पहले ही ऐलान कर चुकी हैं कि इस बार बहुत तोल कर टिकट वितरण होगा। जिताऊ चेहरे को ही पार्टी टिकट देगी। इसके लिये अपने स्तर पर सर्वे भी करवाए जा रहे हैं और सारी सम्भावनाओं को टटोला जा रहा है। डीडीहाट विधानसभा सीट पर भी टिकट के लिये बहुत आड़े आ रहे हैं नेतागण। भाजपा के दिग्गज नेता और विधायक विशन सिंह चुफाल सबसे तजुर्बेदार और दमखम वाले हैं लेकिन टिकट को लेकर इस बार जिस तरह की चाह अन्य में दिखाई दे रही है और सीएम धामी का नाम उछाला जा रहा है, ऐसे में डीडीहाट चुनाव गणित अटपटा बनता दिख रहा है। खटीमा विधानसभा सीट पर सीएम पुष्कर धामी अपनी पसन्द को ही टिकट चाहेंगे लेकिन राजू भण्डारी ने जिस तरह से धार देनी शुरू की है, टिकट तय होने में समय लगेगा। प्रतिपक्ष के उपनेता भुवन कापड़ी कांग्रेस की ओर से दमदार और चुनौती देते दिखाई दे रहे हैं।

बागेश्वर जिले की कपकोट सीट के लिये भी नेतागण खुला ऐलान करने लगे हैं और लग रहा है कि टिकट की बात पूरी न होने पर नाराजी दिखा सकते हैं। कांग्रेस के पूर्व ललित फर्सवान के अलावा अन्य दावेदार यहाँ पर हैं। इसी प्रकार भाजपा में विधायक सुरेश गढ़िया के अलावा अन्य टिकट की चाह में हैं।

नैनीताल सीट पर भाजपा की ओर से दावेदारी में कई नाम हैं और उन्हें लग रहा है कि विधायक सरिता आर्या का नाम काटकर दूसरे को मौका मिलने वाला है। कांग्रेस के अलावा यूकेडी से कौन चुनाव मैदान में होगा यह देखने वाली बात है। भीमताल सीट में तो भाजपा की ओर से मंत्री रामसिंह कैड़ा ही मुख्य दिखाई दे रहे हैं जबकि कांग्रेस की ओर से टिकट की इच्छा जताने वाले अपने को प्रचारित कर रहे हैं। इनके मचलने से पार्टी कार्यकर्ता दुविधा में दिखाई दे रहे हैं।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

आदि कैलास —एक न्ये तीर्थ का उद्भव

सुरेन्द्र सिंह पांगती

देश के प्रधानमंत्री को आदि कैलास की लगभग 14 हजार फीट की ऊँचाई पर स्थित पार्वती ताल के किनारे पूजा करते, लाइव टेलेकास्ट देखकर देशवासियों को पहली बार ज्ञात हुआ होगा कि मानस क्षेत्र में स्थित कैलास के अतिरिक्त एक अन्य हिमालयी शिखर आदि-कैलास नाम से विख्यात है। पर कदाचित इस शिखर/तीर्थ का महात्म्य क्या है, के बारे में वे (स्वयं प्रधान मंत्री भी) अनविज्ञ ही होंगे। प्रश्न उठता है कि यदि 'आदि कैलास' नाम का तीर्थ अस्तित्व में था, वह भी कैलास मानसरोवर के इतने निकट तो वर्तमान तक सनातन धर्म के अनुयाइयों को इसकी जानकारी क्यों नही हुई? ज्ञातव्य है, इस क्षेत्र से प्रति वर्ष भारतवर्ष के अनेक प्रदेशो से सैकड़ो भक्तजन कैलास मानसरोवर की तीर्थयात्रा करते हैं।

दूसरा प्रश्न यह उठता है कि इस चोटी को 'छोटा कैलास' क्यों कहा जाता है/था? यदि इस पर कैलास पर्वत से पहले से ही शिव का थात (स्थाई निवास) था, तो यह छोटा कैलास कैसे हो सकता है? स्कन्द पुराण के मानस-खण्ड के अध्याय 11- 'मानसतीर्थ प्रवेश नियम' में कैलास-मानसोवर तीर्थ मार्ग यात्रा मार्ग का, प्रारम्भ से समापन तक की यात्रा शिविरों का विस्तरित उल्लेख किया गया है। इसमें तीर्थाटन मार्ग वमाचारी (anti-clock) है। यात्रा चम्पावत से हंसतीर्थ जौलजीबी से कालीगंगा (शारदा) के किनारे-किनारे चलकर धार्मद्वार (दारमा), चतुरद्रंष्ट (चौंदांस) होकर पुलोमा पर्वत (लीपूलेख) दर्रा को पार कर खोजरनाथ (खेचर तीर्थ) से कैलास-मानसरोवर पहुँच कर शिव का दर्शन कर, वापसी में पश्चिम दिशा में तप्तकुण्ड (कदाचित बद्रीनाथ) में स्नान कर बैद्यनाथ (बैजनाथ) से हो कर पौड़ी जनपद के ज्वाल्पा धाम में रुद्रावती गंगा (पश्चिमी नयार) में स्नान कर कैलास यात्रा का समापन माना जाता है। यह सम्पूर्ण यात्रा मार्ग वामाचारी है। वर्तमान में इस शास्त्रसम्मत मार्ग का अनुकरण नहीं किया जाता है। जिज्ञासु पाठकों की अभिरुचि के लिये, छोटा कैलास तथा आदि-कैलास के रहस्य को जानना आवश्यक है।

इस आलेख के लेखक को 1990वें दशक में, कुछ पथारोही (जतंबामते) साथियों के साथ सीमान्त जनपद पिथौरागढ़ के धारचूला तहसील के कूटी तथा दारमा घाटियों का भ्रमण करने का अवसर मिला। लगभग बारह हजार फीट पर स्थित शौका जनजाति का गाँव कूटी से आगे कोई स्थाई मानवीय बसासत नहीं थी/है। घाटी में स्थानीय चरवाहे तथा सुरक्षा बलों के चौकियां यत्र तत्र दिखायी देती थी। कुटी गाँव के पश्चिमोत्तर दिशा में कुटीयांग्ती (कुटिला) नदी के किनारे अग्रसर होने पर कैलास जैसी आकृति की, लगभग बीस हजार फीट ऊँची हिमाच्छादित चोटी दूर क्षितिज पर दिखाई दी जिसे स्थानी निवासी 'छोटा कैलास' नाम से सम्बोधित करते थे। इस अति सुन्दर चोटी से प्रवाहित जलधारा (rivulet) के बांये किनारे पर एक चौरस स्थल पर 'न्यै-कोर छ्यू' नामक स्थान है। पूर्व काल में यहाँ पर तिब्बती-व्यापार की मण्डी (bazzar) लगती थी और तिब्बत, जोहार-दारमा तथा व्यांस-चौंदास के व्यापारियों से कूटी के निवासी, कर (tax) वसूलते थे।

'न्यै-कोर-छ्यू' शब्द नाम की व्युत्पत्ति पश्चिमी तिब्बत (शांङ् शुङ्) की भाषा के शब्द से हुई है, जिस का तात्पर्य 'तीर्थ स्थान की परिक्रमा में नदी/जल' (न्यै=तीर्थ, कोर=परिक्रमा, छ्यू=जल/नदी/जलाशय) होता है। निश्चित ही पूर्व काल में तीर्थ की परिक्रमा के अवसर पर तीर्थयात्री इस स्थान पर नदी में स्नान करते होंगे, जिस तरह से मानसवोवर में किया जाता है। कुछ ही दूरी पर एक ऊबर-खाबर मैदान स्थित है, जो 'जौ-लिङ्ग-कौङ्ग' नाम से जाना जाता है। इस शब्द नाम की व्युत्पत्ति भी पश्चिमी तिब्बत की भाषा से हुई है, जिसका तात्पर्य 'देवात्मा का एकान्त ऊबर-खाबर मैदान होता है। इसी ऊबर-खाबर मैदान में पार्वती-ताल स्थित है जो एक ग्लेशिरीय जलाशय है। इस जलाशय के स्तह पर तथाकतित आदि कैलास शिखार का प्रतिविम्ब (REFLEXION), यात्रियों के हृदय में श्रद्धायुक्त विश्मय (awe) का भाव उत्पन्न करता है। इसके तट पर एक छोटे आकार का मडुला (पूजा स्थान, पौंर) स्थापित था जिसे वर्तमान में भव्य मन्दिर का स्वरूप दिया जा चुका है। घाटी के लोग रक्षाबन्धन, श्रीकृष्ण-जनमाष्टमी तथा अन्य शुभ दिवसों पर इसकी यात्रा करते हैं। घाटी के तीर्थयात्री जलाशय की वामाचारी (बांई दिज़ा से) परिक्रमा करने थे। ज्ञात हुवा है कि वर्तमान में तीर्थयात्री दोनो दिशाओ से परिक्रमा करने लगे हैं। ज्ञातव्य है कि तंत्रविद्या में तीन प्रकार के साधक, यथा वामाचारी, दक्षिणाचारी तथा दैव्याचारी (दोनों दिशाओ से परिक्रमा करना) का प्राविधाान है। यह ज्ञात नही हुवा है कि प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने किस दिशा से परिक्रमा की। भारत में, विशेषकर उत्तराखण्ड में, तीनों प्रकार के सनातनी, वतामान में विद्यमान हैं।

छोटा कैलास (आदि कैलास) चोटी के उत्तर में लगभग अठारह हजार फीट ऊँचा 'शिनला' नामक दर्रा स्थित है। पारवती ताल से, शिनला दर्रे के लिए तीव्र ढलान पर एक पगडन्डी (TRACK) प्रारम्भ होता है, जिसक` सहारे चलकर दर्रे का पार कर दारमा घाटी के बिदाङ् (पूर्व काल में यहाँ पर इस नाम का एक गाँव था जिसके खण्डहर वर्तमान में विद्यमान हैं) स्थान पर उतरा जाता है। दारमा और व्यांस घाटियों के निवासी, तीज त्यौहारों के अवसर पर इस दर्रे को वार-पार कर अपने सगे सम्बन्धियों से सम्पर्क करते हैं। दर्रे का 'शिनला' शब्द-नाम, प्राचीन तांत्रिक बौन/पौन प्रथा के अकाशचारी देवात्मा 'देन्पा-नमखा' के दो अभिव्यक्त नामों 'तोनपा शेन-रप' (गुरू-शेन देवात्मा) तथा 'ज्ञेन-ल्हा ओद-कार' (उज्वल प्रकश-शेन देवता) से व्युत्पन्न होने का आभास होता है। अति कठिन दर्रे को पार करते समय लोगो द्वारा स्थानीय देवात्मा का स्मरण करना स्वाभाविक है, जिसके कारण दर्रे का स्वत: उत्पन्न नामकरण हवा है।

माना जाता है कि प्राचीन पौन पूजा-पद्धति (cult) में, (जो वैदिक काल से पूर्व, पश्चिमी तिब्बत शाङ् शुङ् क्षेत्र तथा इससे लगा सीमान्त शौका क्षेत्र में प्रचलन में था) कैलास वासी शिव की, 'शेन' सम्बोधन से आह्वान कर पूजा करते थे। 'शेन' वास्तव में शिव का मौलिक नाम है। यह सम्भव है कि छोटा-कैलास/आदि-कैलास शिखर को पौराणिक काल में 'श्यन-ल्हा' (श्यन देवात्मा) नाम से सम्बोधित किया जाता था जिससे दर्रे का नामकरण हुवा। (तिब्बती वाङ्मय में 'ल्हा' का तात्पर्य देवात्मा और 'ला' का तात्पर्य दर्रा होता है) देवभाषा संस्कृत में 'शेन' शब्द बाज पक्षी के लिये प्रयुक्त होता है और ऋग्वेद के मण्डल 1 के सूक्त 118 में, देवताओं के लिये स्वर्ग से 'सोमरस' ले आने के लिये अश्विनि कुमारों को बाज पक्षी शेन की गति से प्रस्थान करने का आग्रह किया गया है आ वां शेनासो अश्विना वहन्तु रथे युक्तास आशव: पतङ्गा:।
ये अप्तुरो दिव्यासो न गृध्रा अभि प्रयो नासत्या वहन्ति ।4।
(सत्य का पालन करने वाले अश्विन कुमारो! गिद्ध पक्षी की भांति आकाश मार्ग से तीव्र गति से उड़ने वाले बाज पक्षी जिस रथ को खींचते हैं, वह रथ आप दोनो को अति शीघ्र यज्ञस्थत की ओर ले आयें।)

सीमान्त क्षेत्र में शिव को श्येन/शेन नाम से सम्बोधित करने के प्रत्यक्ष प्रमाण मिलते हैं। चमाली जनपद के जोशीमठ तहसील की नीती घाटी के अन्तिम गाँव नीती में तीम्हर-शैन स्थान पर 'नीती महादेव' के नाम से शिव की अराधाना की जाती है। तीम्हर-शैन (ती=पानी, जन, म्हर=मक्खन, शेन=शिव) का तात्पर्य पानी का मक्खन (चूना) युक्त झरना के चूने के अवशेष, याने स्लैक्टाइल/स्टैलैग्माइट होता है। सीमान्त क्षेत्र के अनेक अन्य स्थानों में ऐसी ही परम्पराएं प्रचलित हैं।

उपरोक्त तथ्यों के आधाार पर यह कहा जा सकता है कि तथाकथित हिम-शिखर 'छोटा कैलास' न होकर वास्तव में 'आदि कैलास' है। लेखक द्वारा, इस सन्दर्भ में अपनी रचनाओं में 2019 ई. में प्रकाशित 'प्राणों की साधना' तथा 2021 में प्रकाशित 'Prehistory of Shauka Regime' में(उल्लेख किया है। तथाकथित आदि-कैलास कोई नया तीर्थ न होकर, वैदिक काल से पूर्व काल में स्थापित 'शेन देवता' का अध्यात्मिक स्थान हैं। इस सन्दर्भ का, राष्ट्र की संचित-निधि का दुर्पयोग कर, राजनीतिक लाभ उठाने का प्रयास राष्ट्र के हित में नहीं है।

(देहरादून, उत्तराखण्ड)

पुयणतिथि पर विपिन त्रिपाठी को याद किया

द्वाराहाट। यूकेडी के दिग्गज नेता और पूर्व विधायक स्व.विपिन चन्द्र त्रिपाठी को उनकी पुण्य तिथि पर याद किया गया। इस अवसर पर 'परिवर्तन रैली' में बड़ी संख्या में लोगों ने भागीदारी की।

फचैऽक

रिखू रस खितौ इंजन में, निहुनि अकर भौ अब पेटरौल इंजन सबासब सीज है गई, पड़ौ उनन में जब इथेनौल पड़ौ उनन में जब इथेनौल, डबल इंजन न भै इस्टाट टस न मस तौ ठाड़ै रै गै, हुण लागी जोरल खटखटाट अमरीकाल मारै यसि नड़क, डर फैलगै यां जन जन में अणकसी हमनि यो काव् देखै, रिखू रस खितौ इंजन में।

गणेश पाण्डेय

ज्योतिष की बातें 298

17 सितम्बर 2026 को सूर्य समराशि कन्या में प्रवेश करेगा। वहाँ पर शनि की दृष्टि भी पड़ेगी अत: सूर्य निर्बल रहेगा। फिर भी अगले एक माह कर्क, मेष, धनु व वृश्चिक राशि के जातकों को सूर्य स्वास्थ्य, आत्मसम्मान, आदि अपने कारक विषयों में अल्पमात्र में शुभफल प्रदान करेगा अन्य राशियों को अभी प्रतीक्षा करनी चाहिए।

18 सितम्बर 2026 को मंगल नीचराशि कर्क में प्रवेश करेगा। वहाँ पर कोई शुभाशुभ दृष्टि भी नहीं होगी इस कारण मंगल अत्यन्त निर्बल रहेगा फिर भी मंगल पराक्रम आदि अपने कारक विषयों में अगले 55 दिन वृषभ, कुम्भ व कन्या राशि के जातकों को सामान्य शुभफल प्रदान करेगा।

हरितालिका तीज- भाद्रपद शुक्लपक्ष चतुर्थीयुता तृतीया को हरितालिका तीज का व्रत किया जाता है। तदनुसार सोमवार 14 सितम्बर 2026 को हरितालिका पर अविवाहित लड़कियाँ योग्य वर की प्राप्ति हेतु व्रत करेंगीं।

गणेश जयन्ती- भाद्रपद शुक्लपक्ष मध्याह्न व्यापिनी चतुर्थी में 14 सितम्बर 2026 को श्रीगणेश जयन्ती का पर्व मनाया जाएगा। इस दिन महाराष्ट्र आदि प्रान्तों में ग्यारह दिनों के लिए गणपति मूर्ति की स्थापना सामाजिक रूप से हर्षोल्लास से की जाती है।

कलंक चतुर्थी भाद्रपद शुक्लपक्ष चतुर्थी चन्द्रोदय व्यापिनी तिथि को कलंक चतुर्थी कहते हैं। तदनुसार सोमवार 14 सितम्बर 2026 को इस दिन चन्द्र दर्शन निषेध होगा।

राधा अष्टमी- भाद्रपद शुक्लपक्ष की अष्टमी तिथि को मध्याह्न में अभिजित् मुहूर्त में श्री राधा का जन्म हुआ था तदनुसार शनिवार 19 सितम्बर 2026 को राधा अष्टमी का पर्व मनाया जाएगा।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार 280

मनुस्मृति के विरोध की राजनीति

आजकल सभी पार्टियां, चाहे वे केन्द्रीय स्तर की हों, राज्य स्तर की हों या स्थानीय स्तर की, मनुस्मृति का विरोध करती पाई जाती हैं। समाज के एससी, एसटी, ओबीसी, अल्पसंख्यक वर्गों को खुश करने के लिए मनुस्मृति का गलत व्याख्या के आधार पर विरोध करते रहते हैं। मनुस्मृति हिन्दू धर्म का आदि ग्रन्थ है। यदि हिन्दू धर्म के इस प्रथम ग्रन्थ को ही नकार देंगे तो हिन्दू धर्म में बचेगा ही किया? मनुस्मृति का विरोध करने वाला वास्तव में परोक्ष रूप से हिन्दू धर्म का ही विरोध करता है। दुनिया में किसी भी धर्म का व्यक्ति, चाहे वह ईसाई हो या मुसलमान हो, किसी भी स्थिति में अपने धर्मग्रन्थों का विरोध नहीं करता। कुछ राजनीतिक पार्टियां तो ऐसी हैं जो भगवान के अवतारों का मजाक उड़ाती हैं, पुराणों में लिखी हुई बातों को झूठ मानते हैं। हिन्दुत्व का एक भी लक्षण उनमें नहीं है फिर भी कहते अपने को कट्टर हिन्दू हैं। ब्राह्मण को गाली देकर किसी अन्य जाति का भला नहीं किया जा सकता।

आज देश में एक ऐसी पार्टी का आवश्यकता है जो समाज को जातियों, वर्गों में न देखकर समग्रता के साथ देखे। यदि देश में ऐसी किसी पार्टी का उदय होता है तो वास्तव में सम्पूर्ण समाज का समर्थन उसे मिलेगा। ऐसा मैं मानता हूँ।

-ओंकार नाथ कोष्टा

टनकपुर-बागेश्वर रेल मार्ग के निर्माण की मांग को लेकर प्रदर्शन जारी

बागेश्वर। टनकपुर-बागेश्वर रेल मार्ग की वर्षों पुरानी मांग को लेकर फिर से प्रदर्शन होने लगे हैं। रेल संघर्ष समिति ने तहसील परिसर में प्रदर्शन करते हुए रेल परियोजना के लिए जल्द बजट स्वीकृत करने और निर्माण कार्य शुरू कराने की मांग की। प्रदेश सरकार के खिलाफ नारेबाजी कर रहे प्रदर्शनकारियों ने कहा कि क्षेत्र की जनता तीन दशकों से अधिक समय से इस मांग को लेकर आन्दोलनरत है लेकिन इस कार्य को अंजाम नहीं दिया जा रहा है।

आन्दोलनकारियों ने कहा कि टनकपुर बागेश्वर रेल मार्ग अत्यन्त महत्वपूर्ण है, इसके बन जाने से बागेश्वर और आसपास के क्षेत्रों में आवागमन सुगम होगा, जिससे व्यापार, पर्यटन, रोजगार को बढ़ावा मिलेगा। समिति की अध्यक्ष नीमा दफौटी ने रोष प्रकट करते हुए कहा कि केवल आश्वासन देने से कुछ नहीं होगा। जनता की इस मांग को शीघ्र पूरा किया जाना चाहिये। इनके साथ हरीश सोरनी, चरण सिंह बगरी, विक्रम सिंह देवड़ी, लक्ष्मी धर्मशक्तू, देवेन्द्र प्रवीण दफौटी भी थे।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

12साल बाद कुटी में कुम्भ पूजा, बहन-बेटियों का सम्मान

- रं रीति-रिवाज से सम्पन्न हुए अनुष्ठान
- व्यास घाटी के अन्तिम ग्राम में जुटे लोग
- नेपाल सहित विभिन्न जगहों से पहुंची बहनें
- पारम्परिक वेशभूषा और वाद्ययन्त्र प्रदर्शन
- एवरेस्ट विजेता ने रोपे एक हजार पौंधे

हया गुलच, हया मापंग, हया नमच्यल सहित अन्य देवी-देवताओं का पूजन

परम्पराओं से हम हैं : मंगल सिंह कुटियाल

इस प्रकार की परम्पराओं से हम सब हैं, इनको बरकरार रखना है। वर्षों बाद अपने मूल स्थान जाकर जिस सकून को पाया वह ऐतिहासिक पल है। इससे सामाजिक समरसता बढ़ती है। आपसी एकता-भाईचारा इन आयोजनों में झलकता है। निश्चित अवधि में होने वाले इस आयोजन के लिये सभी ग्रामवासी व सहयोगी बधाई के पात्र हैं।

ऐतिहासिक कुम्भ पूजा की बधाई : फली सिंह दताल

कुटी में आयोजित ऐतिहासिक कुम्भ पूजा की सबको हार्दिक बधाई। इसमें जिस प्रकार से बहिनों-बेटियों ने आकर अपनी मातृभूमि और अपनी परम्पराओं को संजोने में अग्रणीय भूमिका निभाई है वह समाज को आगे बढ़ाने में बहुत बड़ा योगदान है। इसके लिये सभी को हार्दिक बधाई।

धारचूला। चीन सीमा से लगे अन्तिम गांव कुटी में बारह वर्ष में एक बार होने वाली ऐतिहासिक कुम्भ पूजा रं रीति रिवाज और धार्मिक परम्पराओं के साथ सम्पन्न हुई। सात दिसवीय इस आयोजन में व्यास, दारमा, चौदास घाटी सहित नेपाल और देश के विभिन्न हिस्सों में ब्याही गई दो सौ से अधिक बेटियां और और बहनों ने अपने मायके कारक खुशियां बांटीं। इस अपसर पर विभिन्न क्षेत्रों ऐ आए सैकड़ों लोगों ने रं संस्कृति को जीवन्त कर दिया।

कुम्भ पूजा के दौरान लामाओं (पुजारियों) चेत सिंह कुटियाल, हरीश सिंह कुटियाल, गोपाल सिंह कुटियाल, वीरेन्द्र सिंह कुटियाल, गोकरन सिंह कुटियाल, धनपाल कुटियाल और शुभम कुटियाल ने रं परम्पराओं के अनुसार हया गुलच, हया मापंग, हया नमच्यल सहित अन्य देवी देवताओं की पूजा अर्चना की। देश प्रदेश और ग्राम क्षेत्र की सुख समृद्धि के लिये प्रार्थना की।

ग्राम प्रधान नागेन्द्र सिंह कुटियाल सहित समस्त ग्रामीण कुम्भ पूजा के लिये पारम्परिक वेशभूषा में सजकर वाद्ययन्त्रों की धुन में पंचायत घर से नृत्य करते हुए देवालय पहुंचे। महिलाओं ने पूजा के लिये पहुंचे पुजारियों के साथ वर्षों बाद मायके लौटी बेटियों और बहनों का पारम्परिक तरीके से स्वागत किया।

पूरे अनुष्ठा में रं संस्कृति और लोक परम्पराओं का उत्साह देखने को मिला। पूजा में सम्मिलित दो सौ से अधिक बेटियां (चमे) और बहनें (रिनश्या) को शॉल और स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। इसके अलावा ग्राम के 70 वर्ष से अधिक आयु के वरिष्ठ महिला पुरुषों को भी सम्मानित किया गया। ग्राम प्रधान ने इस वृहद आयोजन को सफल बनाने में सहयोग करने वाले सभी ग्रामीणों का आभार जताया।

कुटी में धार्मिक पूजा के साथ ही भावानात्मक मिलन के इस मौके पर नेपाल के तिंकर गांव से दशरथी कुटियाल तिंकरी, चौदास घाटी के यरसो से कल्पना कुटियाल, दारमा घाटी के दताल से मारंट एवरेस्ट विजेता सुमन कुटियाल दताल, हल्द्वानी से भवानी कुटियाल बृजवाल, किशोरी कुटियाल गर्ब्याल, एकता कुटियाल पतियाल, लखनऊ से रूपा कुटियाल ग्रुज्याल समेत बड़ी संख्या में बेटियां अपने पैतृक गांव पहुंचीं। अपनों से मिलने की ललक और भावुकता समारोह में दिखाई दी। एवरेस्ट विजेता सुमन कुटियाल दताल ने अपनी 93 वर्षीय मां खिमे देवी और मौसी पद्मश्री अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित चन्द्रप्रभा ऐतवाल के साथ वन विभाग के सहयोग से एक हजार पौधों का वितरण कर पर्यावरण संरक्षण का सन्देश दिया।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

ठेकेदार नाम तो...

प्रथम पृष्ठ का शेष

लेकर घर आ गई। घर आकर लछमा की बात का उसे ध्यान आया कि कल उनकी अपनी बहू आ जायेगी तो उसका दर्जा ऊपर ही रहेगा। परमानन्द का लड़का अभी छोटा ही था। भिन्डी को मालूम हुआ कि उसकी शादी के लिये अच्छी लड़की की तलाश शुरू कर दी गयी है। यहाँ तक तो कोई बुराई उसे नजर नहीं आई, हर माँ-बाप अपने लड़के का विवाह करते ही हैं, पर एक बात भिन्डी को कुछ अखर सी रही थी कि नई बहू के लिये इतने अधिक गहने क्यों बनवाये जा रहे हैं, जबकि व्सयं उसकी शादी में एक-दो जेवर ही बनवाये गये थे।

यहीं से भिन्डी के मन में कुछ ईर्ष्या का अंकुर प्रस्फुटित होने लगा। जिन चीजों की ओर पहले उसका ध्यान कभी नहीं जाता था, उस पर भी अब वह कई कोणों से विचार करने लगी थी। उसके ध्यान में अब यह बात भी आई कि वह लोग अपने लड़के की तो अच्छी पढ़ाई-लिखाई करवा रहे हैं, पर भतीजे को तो एक दिन के लिये 'इस्कूल' नहीं भेजा था। वह रोज हर बात पर गौर करती और कोई न कोई नया नुक्ता मिल ही जाता कि उनके साथ सगे बेटे बहू के समान व्यवहार नहीं हो रहा। कई महीनों तक यूँ ही चलता रहा। एक दिन उसने जगरनाथ से कह ही डाला कि हमें अब अलग हो जाना चाहिये। जगरनाथ ने उसकी बात टाल दी और भिन्डी को इस तरह की अलगाव की बातें न करने की सख्त हिदायत दे दी। पर उधर भिन्डी उन लोगों के साथ रहने में घुटन महसूस करने लगी थी। उसने अब घर के कामों में हाथ बँटाना भी कम कर दिया था। वह आधा काम कर लेती पर पर आधा चचेरी सास के लिये छोड़ी देती। उसके बदले हुए व्यवहार की भनक सावित्री को लग गई, पर वह कुछ बोली नहीं। लेकिन यह स्थिति कब तक चलती। भिन्डी जगरनाथ पर अलग रहने के लिये जोर डालने लगी। एक दिन जगरनाथ को मालूम पड़ा कि अब भिन्डी चाची से लड़ाई भी करने लगी है, अतः उसने भी इसी में भलाई समझा कि अलग हो जायें, क्योंकि एक न एक दिन अलग तो होना ही है फिर अधिक कड़वाहट होने से पहले ही अलग हो जायें तो अच्छा है। इस सम्बन्ध में चाचा से सीधे बात करने की हिम्मत तो उसे नहीं हुई, पर चाची से एक दिन उसने अपने मन की बात कह ही डाली। चाची को भी अब लगने लगा कि स्थिति विस्फोटक होने से पूर्व ही राजी-खुशी से अलग हो जायें तो इससे अच्छी बात क्या होगी। परमानन्द को जब मालूम हुआ तो उसे बुरा लगा, पर सावित्री ने उसे मना ही लिया। इस प्रकार बंटवारा हो गया। बंटवारे में पंचों को भी बीच में लाने की कोई आवश्यकता नहीं पड़ी क्योंकि जमीन जायदाद पहले से ही अलग अलग थी। भिन्डी जो सामान दहेज में लाई थी, वह उसी का था ही। इस बीच कोई नई सम्पत्ति अर्जित भी नहीं हुई थी कि जिस पर विवाद होता। अतः दोनों परिवार अलग-अलग रहने लगे।

अब भिन्डी पहले से कहीं अधिक काम करने लगी। जगरनाथ के भी अलग होने के बाद परमानन्द को भी अधिक काम करना पड़ गया, क्योंकि पहले जगरनाथ घर का काफी काम संभाल लेता था। सावित्री को भी अब अधिक काम करना पड़ गया। भिन्डी को लगा कि उनकी स्पर्द्धा में यह लोग अधिक काम करने लगे हैं अन्यथा पहले तो उन्हें इतना काम करते हुये नहीं देखा गया था। परमानन्द एक खेत में धान बोता, तो भिन्डी दो में बुआती। इस प्रकार धीरे-धीरे सावित्री चाची व भिन्डी में अघोषित रूप से प्रतिस्पर्द्धा का दौर प्रारम्भ हो गया। सावित्री ने सात पाट का घघरा सिलवाया, तो भिन्डी नौ पाट का ले आई। सावित्री ने अगली बार तेरह पाट का घाघरा सिलवा लिया।

यद्यपि अन्दर-अन्दर दोनों में घोर ईर्ष्या, द्वेष एवं स्पर्द्धा चलती थी, पर ऊपरी तौर पर उन्होंने बोलचाल बनाए रखी। अब भिन्डी के भी बच्चे हो गये थे। सावित्री अपने बच्चों के लिये एक जोड़ा कपड़ा खरीद कर लाती तो भिन्डी दो जोड़े लाती। यह प्रतिस्पर्द्धा दिन पर दिन बढ़ती ही गई और इतनी बढ़ गई कि अब उनकी बातों से भी एक दूसरे को नीचा दिखाने की बू आने लगी।

एक दिन भिन्डी ने कहा- 'बच्चों की आदत खराब हो गई है। छः सेर घी महीने भर में ही चट कर गये', सावित्री ने भी कहा- 'बच्चे खाते कम हैं, बरबाद अधिक करते हैं। तुम्हारे बच्चे तो तब भी ठीक हैं, मेरे बच्चे पन्द्रह दिन में ही छः सेर घी खा गये।' एक दिन बातों-बातों में सावित्री ने कहा- 'मेरी भैंस ने अब दूध कम देना शुरू कर दिया है। अब एक बार में बीस सेर से अधिक दूध नहीं देती।' भिन्डी फट से बोली- 'हाँ, आजकल हरा चारा भी कम हो गया है। मेरी भैंस भी तीस सेर से अधिक दूध नहीं दे रही।' बातों-बातों में भिन्डी ने पूछा- 'सास जी, आजकल चाँदी के रुपये भी जाने कैसे आ गये हैं? कुछ दिन पहले पाँच सौ रुपये आये थे, आज खोल कर देखा तो काले पड़ गये हैं। क्यों पड़ते होंगे काले?' सावित्री ने कहा- 'चाँदी तो काली पड़ती ही है। ठीक से पालिश नहीं किये गये होंगे। मेरे यहाँ भी दो चार रोज पहले ही एक हजार चाँदी के रुपये आये थे, सब काले पड़ गये।'

इस प्रकार दोनों हर बात पर एक दूसरे को नीचा दिखाने का भी प्रयास करतीं। संसार में कुछ लोग दो तरह के सुखों का अनुभव करते हैं, एक तो स्वयं को प्राप्त शारीरिक व मानसिक सुख तथा दूसरा पड़ोसी के दुखी होने का सुख। भिन्डी व सावित्री दोनों को इस दूसरे सुख में ज्यादा आनन्द मिलता। जब कभी किसी एक का बच्चा बीमार पड़ता तो मन ही मन दूसरी खुश होती। दोनों चाचा-भतीजे में यूँ तो प्रेम भाव बना ही रहा परन्तु अपनी-अपनी पत्नियों के कारण जाने-अनजाने में ही, एक-दूसरे को नीचा दिखाने की प्रवृत्ति ने उनको भी अछूता न रखा।

होड़ की भी एक सीमा होती है। इस होड़ ने उन दोनों परिवारों को कंगाली पर ला खड़ा कर दिया। जो रुपया-पैसा घर में था, वह अनुत्पादक मदों में, दिखावे मात्र के लिये खर्च हो जाता। अब जगरनाथ तो एकदम कंगाल ही हो गया, परमानन्द के हालत भी अच्छे नहीं रहे। जब बच्चों की फीस व किताब कापियों के लिये भी पैसे की कमी पड़ने लगी तो परमानन्द रोजगार की तलाश में घर से निकल पड़ा। वह रामनगर पहुँचा। यह उन दिनों की बात है, जब विल्सन ने वनों के दोहन का दोहन का काम लोगों को सिखा दिया था तथा ठेकों पर जंगलों का कटान प्रारम्भ हो चुका था। वहाँ पर उन दिनों जंगल के ठेकों का काम चल रहा था, अतः एक ठेकेदार के यहाँ उसे मुन्शीगिरी का काम किमल गया, पर इससे वह दो वक्त का खाना ही खा पाता। एक दो साल तक वह घर एक भी पैसा नहीं भेज पाया। पर मुन्शीगिरी का काम करते-करते उसको ठेकेदारी के सभी गुर सीखने को मिल गये। जंगलात वालों से उसकी अच्छी तरह जान पहचान हो गई। इसका लाभ उसको यह हुआ कि उसे छोटे-मोटे उप-ठेके मिलने लगे। बाद में उसने स्वयं ठेके लेने भी शुरू कर दिये। जंगल की ठेकेदारी में उसे बहुत अधिक सफलता मिल गई। अब वह काफी रुपये-पैसे घर भेजने लगा, जिससे उसके परिवार के रहन-सहन का स्तर सुधर गया।

जगरनाथ वर्षों तक घर में ही रहा। घर में आमदनी के कोई अधिक साधन तो थे नहीं, इसलिये वह अब दो वक्त की रोटी भी नहीं जुटा पाता। उधर परमानन्द का परिवार सुख चैन से रह रहा था। भिन्डी जल भुन कर रह गई थी। सावित्री भी, जब तक उसके समान ही, कंगाली की हालत में थी तो उसे उसे सन्तोष रहता था कि चलो उनकी भी हालत उनके समान थी। पर ईर्ष्या के कारण अब उसे अपने प्रतिद्वन्दी की अच्छी हालत सहन नहीं हो पा रही थी। भिन्डी ने जगरनाथ पर जोर डाला कि वह भी रामनगर जाकर कुछ काम करे। जब पत्नी रोज उसे ताने देने लगी तो एक दिन वह भी रामनगर की ओर चल पड़ा।

रामनगर पहुँच कर उसने रोजगार की तलाश की। पढ़ा लिखा वह था नहीं, इसलिये उसे मुन्शीगिरी में रखा नहीं जा सकता था। जब खाने के भी लाले पड़ने लगे तो उसने जंगल के एक ठेकेदार के यहाँ मजदूरी पर काम करना शुरू कर दिया। वह दिन भर कुल्हाड़ा चलाता, पर मजदूरी दो वक्त रोटी खाने भर को भी नहीं मिलती, अपने घर पैसे भेजने का तो प्रश्न ही नहीं उठता था। जब उसे मजदूरी करते-करते कई साल बीत गये तो उसे लगने लगा कि अब जंगल के काम के विषय में वह वह भी काफी कुछ जान गया है। उसने अपने ठेकेदार से अनुनय विनय की कि उसे भी छोटा उप-ठेका दे दें। ठेकेदार ने जंगल का एक छोटा टुकड़ा उसे दे दिया। पर उसे ठेकेदारी का असली अनुभव था ही कहाँ? ठेकेदारों के दाँव-पेंचों की अन्दरूनी जानकारी उसे थी ही नहीं। उसे बस इतना ही मालूम था कि कम कीमत पर जंगल लेकर, उसकी लकड़ी काट कर, अधिक दाम में बेची जाती है और काफी लाभ प्राप्त हो जाता है परन्तु जंगल का ठेका इतना भर ही तो होता नहीं। उन दिनों बड़े ठेकेदार छपवाते छोटा और काटते बड़ा पेड़। बिन छपे अच्छे पेड़ की जड़ इतनी कमजोर कर देते कि छपा पेड़ कटने पर जब उस पर गिरता तो वह भी धराशाही हो जाता और मामूली जुर्माना भर कर वह उस पेड़ से अधिक लाभ कमा लेते हैं। खोखले पेड़ों की उन्हें दूर से ऐसी पहचान होती कि वह उसी हिसाब से ठेके की बोली बोलते, तब हानि होने का कोई सवाल नहीं उठता था, फिर व्यापारियों को अपनी वाकपटुता के कारण ऊँचे दामों में लकड़ी बेचते।

जगरनाथ को यह सब गुर मालूम नहीं थे। ठेकेदार ने स्टाम्प पेपर पर लिखवा कर उसे उप-ठेका दिया था कि उसकी लाभ-हानि का जिम्मेदार जगरनाथ ही था। ठेकेदार को तो एक मुस्त रकम ठेके की कीमत के रूप में देनी ही थी।

जब जगरनाथ ने जंगल का कटान शुरू करवाया तो लोग उसे मजदूर के बजाय 'ठेकेदार साहब' कहकर पुकारने लगे। अपना नाम 'ठेकेदार' सुनकर वह मन ही मन प्रसन्न होता। उसने अपने घर चिट्ठी भिजवाई कि अब वह ठेकेदार बन गया है और वह जल्दी ही अपने चाचा की तरह पैसे भेजने लगेगा। भिन्डी यह खबर पाकर बल्लियों उछल पड़ी। उसकी मुदार पूरी हो गई थी। अब उसे भी 'ठेकेदारनी' बन जाने का उल्लास था क्योंकि सावित्री देवी को लोग पहले से ही 'ठेकेदारनी' कहने लगे थे।

उधर जगरनाथ ने कुछ ही पेड़ कटवाये थे कि पेड़ खोखले निकलने लगे। उसने सोचा कि दो चार पेड़ ही खोखले निकलेंगे बाकी सब ठीक होंगे, पर भाग्य ने उसका साथ नहीं दिया। सारे पेड़ अन्दर से खोखले थे। अनुभवी ठेकेदार न इसी कारण उप ठेका जगरनाथ को दे दिया था, हालांकि उस टुकड़े पर उसकी बोली बहुत कम पर छूटी थी। उसने जगरनाथ को यह उप-ठेका उधार में दिया था, पर ऊँचे दाम पर। जगरनाथ को इस उप-ठेके में जबरदस्त घाटा हो गया। ठेकेदार ने ठेके की कीमत लेनी ही थी, चाहे उप-ठेकेदार को लाभ हुआ हो या हानि। उसने जगरनाथ से तुरन्त पैसा देने के लिये जोर डाला, पर उसके पास पैसे थे ही कहाँ? जब बात मुकदमे की आ गई तो जगरनाथ अपने घर गया। उसने भिन्डी से जेवर ले लिये ताकि उन्हें बेच कर ठेकेदार का पैसा चुकाया जाय। भिन्डी को ठेकेदारनी बनने की इतनी खुशी थी कि उसने सहर्ष अपने जेवर जगरनाथ को दे दिये थे। जब जेवर बेचे गये तो इससे भी पैसा पूरा नहीं पड़ा। अतः अपनी 'ठेकेदारी' की आन बचाने के लिये उसने अपनी उपजाऊ जमीन भी कौड़ी के भाव बेच दी।

सावित्री देवी उर्फ बड़ी ठेकेदारनी को जब पता चला कि जगरनाथ को जबदस्त घाटा हो गया है तो वह ऊपरी तौर से ही सही, सहानुभूति प्रकट करने भिन्डी के पास गई और बोली- 'बहू सुना है जगरनाथ को बहुत घाटा हो गया है, मुझे यह सुनकर बड़ा दुख हो रहा है।' भिन्डी तपाक से बोली- 'घाटा हुआ तो क्या, ठेकेदार नाम तो पाया।' घाटा होने का दुख उसे बिल्कुल नहीं था बल्कि ठेकेदारनी बनने का दर्प उसके चेहरे पर स्पष्ट दिखाई पड़ता था।

सुरेश मेडिकल स्टोर
नियर- टैक्सी स्टैंड
मदकोट रोड
मुनस्यारी
मो.- 8077929044, 9756822576

HIMALAYAN
MUNSYARI STORE
Johar Nagar, Bhotia Padav, Haldwani
(एक छत के नीचे अपने हस्तशिल्प, कुटीर उद्योग के उत्पादों का विश्वसनीय प्रतिष्ठान)
मो.- 8755116161. 84779321316 वीरेन्द्र सिंह मपवाल

मिलम बेक हाउस (नियर- टैक्सी स्टैंड चौराहा) मुनस्यारी
सम्पर्क- 8941807388
MILAM BAKE HOUSE CRAFTED IN THE MOUNTAINS
पहाड़ों में तैयार, स्वाद से भरपूर। हिमालय की वादियों से आपके स्वाद तक। आपके लिये लेकर आया है ताजे स्वादिष्ट और गुणवत्तापूर्ण बेकरी उत्पाद।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

अनंत चतुर्दशी के पावन पर्व पर आदर्श गांव दरकोट मेले की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-

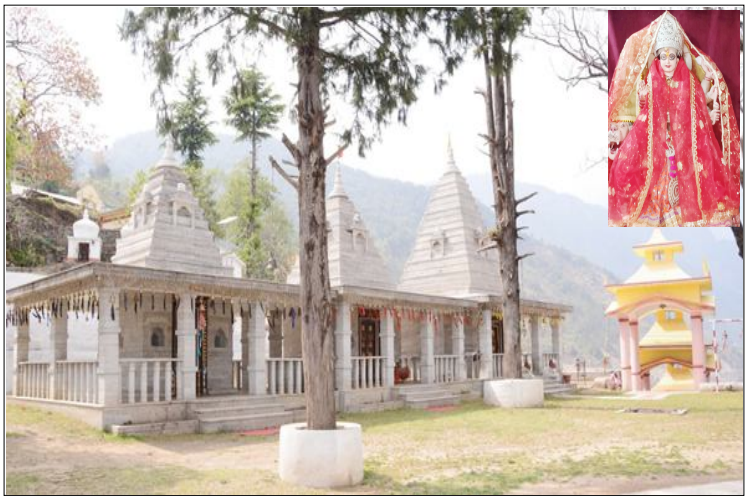

नवराज सिंह पांगती
श्रीमती चित्रा पांगती
दरकोट, हाल देहरादून

Hotel
Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

धमोत होम स्टे
धरमघर/चौकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148 www.mountainheights.in

न तेरा न मेरा Thats
APNA GHAR
चौकोड़ी
HOTEL RESTRO BANQUET
Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)
पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया
मो. 9458920379
6396098804
YOGA
MEDITATION
HOMELY FOOD
LIVE MUSIC
BIRTHDAY
WEDDING

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236
मो.- 8958525979, 9411134775

घर से बाहर अपनों का साथ
होटल लक्ष्य इन
मदकोट
नरेन्द्र सिंह रावत
सम्पर्क 7351285555

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)